E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2025; 7(1): 81-84
Received: 07-10-2024
Accepted: 10-11-2024

सुनीत कुमार द्विवेदी
शोध छात्र समाजशास्त्र, शासकीय ठा. रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. महानंद द्विवेदी
प्राध्यापक समाजशास्त्र, शासकीय ठा. रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
सुनीत कुमार द्विवेदी
शोध छात्र समाजशास्त्र, शासकीय ठा. रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन

सुनीत कुमार द्विवेदी, महानंद द्विवेदी

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2025.v7.i1b.1334

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित अनुसूची का निर्माण किया गया है। इसमें रीवा जिले की 250 युवा उत्तरदाता एवं 50 पुलिस विभाग के उत्तरदाताओं से उद्देश्यपरक प्रतिदर्श के आधार पर चयन कर तथ्यों के संकलन हेतु संबंधित उद्देश्यों के आधार पर अनुसूची का निर्माण किया गया। शोध क्षेत्र में मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करने से संबंधित आंकड़ों का One-way ANOVA द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है जिसमें सहमत, असहमत और पता नहीं का मध्यमान क्रमशः 20.89, 3.78 व 3.11 है। जिसमें 'एफ' अनुपात मान 48.60 है (युवा वर्ग) एवं मध्यमान क्रमशः 4.33, 1. 00 व 0.22 है। जिसमें 'एफ' अनुपात मान 37.39 है (पुलिस विभाग के उत्तरदाता)। 'पी' का मान < .00001 है। $p<0.05$ पर परिणाम सार्थक है। अतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है।

कुटशब्दः रीवा जिला, मादक पदार्थ, युवा वर्ग, मनोदशा, प्रभाव

1. प्रस्तावना
प्राचीन काल से आधुनिक काल तक भारत में मादक पदार्थो का सेवन पुरूष वर्ग के द्वारा प्रत्येक सामाजिक उत्सवों में किसी न किसी रूप में किया जाता था क्योंकि मादक पदार्थो के सेवन को भारतीय समाज ने स्वीकृति भी दे रखी थी। उदाहरणार्थ–
अथर्ववेद में 'भांग के प्रयोग का उल्लेख मिलता है। आर्य लोग 'सोम रस' का प्रयोग (शराब के लिए) करते थे। शिव पुराण में भांग के लिए, 'विजया' शब्द का प्रयोग किया गया है। आधुनिक काल में 'मद्यपान' शब्द का प्रयोग शराब के लिए किया जाता है। भारत में प्राचीन काल से ही अफीम, गांजा, चरस और कोकीन का प्रयोग होता रहा है।
मादक पदार्थों के सेवन के फलस्वरूप न केवल विविन्न प्रकार की शारीरिक व्याधियां पैदा होती हैं अपितु व्यक्ति, पारिवारिक समाज के विघटन के साथ–साथ अपराधों की वृद्धि व पुलिस–प्रशासन और व्यवस्थाओं की समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। लम्बे समय तक अधिक मात्रा में नशीले पदार्थों के सेवन से शरीर निष्क्रिय व कमजोर हो जाता है, रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है एवं विभिन्न प्रकार के प्राणघातक रोग पैदा हो जाते हैं। शारीरिक दुष्प्रभावों के साथ–साथ मानसिक क्षमता का भी ह्रास होने लगता है व व्यसनी, क्रोधी, चिड़चिड़ा होने के साथ–साथ अपनी अपनी भावनात्मक बौद्धिक शक्ति के खो देता है। व्यसनी की कार्यक्षमता बुरी तरह से कम होने लगती है। आय का अधिकांश भाग नशे की भेंट चढ़ जाता है। फलतः अनेकों प्रकार की समस्याएं यथा अपराध, दुर्घटना, आत्महत्या आदि का ग्राफ बढ़ जाता है।

2. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण
किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – कुमार एम.एस. (2002)[1], चंडीरामनी के, त्रिपाठी बीएम (1993)[2], नायक आरबी, मूर्ति पी. अरूण (2008)[3], बाबू आरएस, सेनगुप्ता एसएन (1997)[4], भान, ए. (2009)[5], राना, सुमन एवं जाधव, जगदीश (2018)[6] एवं वंदना (2016)[7]।

3. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

युवाओं में मादक द्रव्यों के सेवन के परिणाम जो युवा लगातार मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं, उन्हें अक्सर कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसमें शैक्षणिक कठिनाइयाँ, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ (मानसिक स्वास्थ्य सहित), साथियों के साथ खराब संबंध और किशोर न्याय प्रणाली में शामिल होना शामिल है। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन का आंकलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य शासन द्वारा कठिनाइयों को दूर कर विकसित करने पर समर्थ हो सकता है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो सामाजिक क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

4. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

शोध क्षेत्र में मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करने की स्थिति का अध्ययन करना।

5. शोध की परिकल्पनाएँ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

5.1 भौगोलिक परिसीमनः प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। इसके अन्तर्गत सभी विकासखण्ड सम्मिलित हैं।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमनः अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, जिला अन्तर्गत मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है।

6. शोध विधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 साक्षात्कार विधिः शोध क्षेत्र में समन्वित मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन करने के लिए इस क्षेत्र में युवाओं एवं पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों से वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.1.1 शोध उपकरणः प्रस्तुत शोध हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार प्रश्नावली पत्रक का उपयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

रीवा जिला में मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित 300 उत्तरदाताओं जिसमें 250 युवा वर्ग एवं 50 पुलिस विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

8. शोध क्षेत्र का परिचय

रीवा जिला 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है।

9. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक 1: मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है, का अध्ययन (युवा वर्ग उत्तरदाता)

क्र.	विकासखण्ड का नाम	न्यादर्श में चयनित युवा उत्तरदाताओं की संख्या	मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है।					
			सहमत		असहमत		पता नहीं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	रीवा	50	40	80.00	06	12.00	04	8.00
2.	सिरमौर	25	19	76.00	02	8.00	04	16.00
3.	जवां	25	16	64.00	05	20.00	04	16.00
4.	त्योंथर	25	18	72.00	04	16.00	03	12.00
5.	हनुमना	25	20	80.00	03	12.00	02	8.00
6.	मऊगंज	25	19	76.00	03	12.00	03	12.00
7.	नईगढ़ी	25	16	64.00	05	20.00	04	16.00
8.	गंगेव	25	20	80.00	03	12.00	02	8.00
9.	रायपुर कर्चु.	25	20	80.00	03	12.00	02	8.00
योग		250	188	75.2	34	13.6	28	11.2

One-way ANOVA

Data Summary				
Gropups	**N**	**Mean**	**Std. Dev.**	**Std. Error**
सहमत	9	20.89	7.34	2.45
असहमत	9	3.78	1.31	0.44
पता नहीं	9	3.11	0.93	0.31
Annova Summary				
Sources	**Degree of freedom DF**	**Sum of Squares SS**	**Mean Squares MS**	**F**
Between groups	2	1827.85	913.93	48.60
Within groups	24	451.33	18.81	
Total	26	2279.19		

The f-ratio value is 48.60.
The p-values is <.0001.
The result is significant at $p<0.05$.

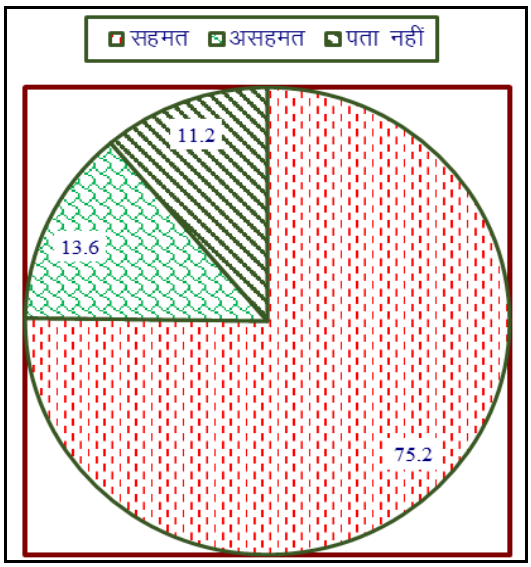

आरेख 1: मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है, का अध्ययन (युवा वर्ग उत्तरदाता)

9.1 विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 में मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करने से संबंधित आंकड़ों का संग्रहण किया गया है। इसके लिए साक्षात्कार पत्रक के माध्यम से न्यादर्श में चयनित रीवा विकासखण्ड से 50 और सभी विकासखण्डों से 25–25 अर्थात कुल 250 युवा उत्तरदाताओं से जिसमें सभी शहरी एवं ग्रामीण, सभी धर्म एवं आयु के लोग सम्मिलित है, आंकड़ों का संग्रहण किया गया है।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र में 75.2 प्रतिशत लोग सहमत थे कि मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है। इसी संदर्भ में 13.6 प्रतिशत लोग असहमत एवं 11.2 प्रतिशत इस संबंध में पता नहीं कि मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है।

शोध क्षेत्र में मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करने से संबंधित आंकड़ों का One-way ANOVA द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है जिसमें सहमत, असहमत और पता नहीं का मध्यमान क्रमशः 20.89, 3.78 व 3.11 है। जिसमें 'एफ' अनुपात मान 48.60 है। 'पी' का मान < .00001 है। $p<0.05$ पर परिणाम सार्थक है।

अतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है।

सारणी क्रमांक 2: मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है, का अध्ययन (पुलिस विभाग के उत्तरदाता)

क्र.	विकासखण्ड का नाम	न्यादर्श में चयनित पुलिस विभाग के उत्तरदाताओं की संख्या	मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है।					
			सहमत		असहमत		पता नहीं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	रीवा	10	09	90.00	01	10.00	00	00
2.	सिरमौर	05	04	80.00	01	20.00	00	00
3.	जवां	05	03	60.00	01	20.00	01	20.00
4.	त्योंथर	05	04	80.00	01	20.00	00	00
5.	हनुमना	05	04	80.00	01	20.00	00	00
6.	मऊगंज	05	04	80.00	01	20.00	00	00
7.	नईगढ़ी	05	03	60.00	01	20.00	01	20.00
8.	गंगेव	05	04	80.00	01	20.00	00	00
9.	रायपुर कर्चु.	05	04	80.00	01	20.00	00	00
योग		50	39	78.0	9	18.0	2	4.0

One-way ANOVA

Data Summary				
Gropups	**N**	**Mean**	**Std.Dev.**	**Std. Error**
सहमत	9	4.33	1.81	0.61
असहमत	9	1.00	0	0
पता नहीं	9	0.22	0.44	0.15
Annova Summary				
Sources	**Degree of freedom DF**	**Sum of Squares SS**	**Mean Squares MS**	**F**
Between groups	2	85.85	42.93	37.39
Within groups	24	27.56	1.15	
Total	26	113.41		

The f-ratio value is 37.39.
The p-values is <.0001.
The result is significant at $p<0.05$.

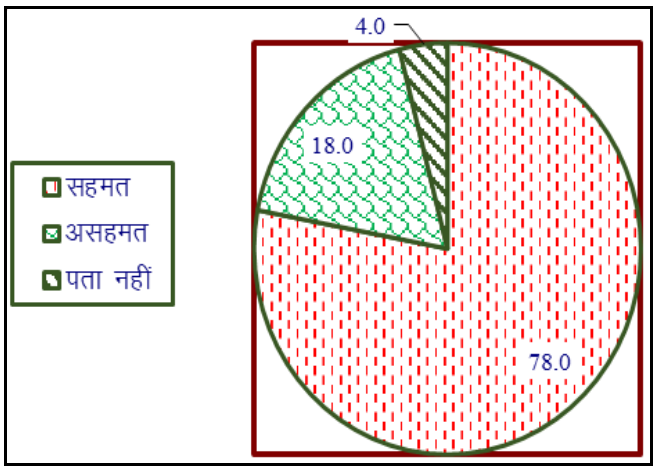

आरेख 1: मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है, का अध्ययन (पुलिस विभाग के उत्तरदाता)

9.2 विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 में मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करने से संबंधित आंकड़ों का संग्रहण किया गया है। इसके लिए साक्षात्कार पत्रक के माध्यम से न्यादर्श में चयनित रीवा विकासखण्ड से 10 और सभी विकासखण्डों से 05–05 अर्थात कुल 50 पुलिस विभाग के उत्तरदाताओं से आंकड़ों का संग्रहण किया गया है।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र में 78.0 प्रतिशत पुलिस विभाग के उत्तरदाता सहमत थे कि मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदश को प्रभावित करता है। इसी संदर्भ में 18.0 प्रतिशत लोग असहमत एवं 4.0 प्रतिशत इस संबंध में पता नहीं कि मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है।

शोध क्षेत्र में मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करने से संबंधित आंकड़ों का One-way ANOVA द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है जिसमें सहमत, असहमत और पता नहीं का मध्यमान क्रमशः 4.33, 1.00 व 0.22 है। जिसमें 'एफ' अनुपात मान 37.39 है। 'पी' का मान < .00001 है। $p<0.05$ पर परिणाम सार्थक है।

अतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है।

10. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है–

- शोध क्षेत्र के 250 युवा वर्ग के उत्तरदाताओं के अभिमतानुसार 75.2 प्रतिशत लोग सहमत थे कि मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है। इसी संदर्भ में 13.6 प्रतिशत लोग असहमत एवं 11.2 प्रतिशत इस संबंध में पता नहीं कि मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है।
- शोध क्षेत्र के 50 पुलिस विभाग के उत्तरदाताओं से आंकड़ों के आधार पर 78.0 प्रतिशत पुलिस विभाग के उत्तरदाता सहमत थे कि मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदश को प्रभावित करता है। इसी संदर्भ में 18.0 प्रतिशत लोग असहमत एवं 4.0 प्रतिशत इस संबंध में पता नहीं कि मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है।
- शोध क्षेत्र में मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करने से संबंधित आंकड़ों का One-way ANOVA द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है जिसमें सहमत, असहमत और पता नहीं का मध्यमान क्रमशः 20.89, 3.78 व 3.11 है। जिसमें 'एफ' अनुपात मान 48.60 है (युवा वर्ग) एवं मध्यमान क्रमशः 4.33, 1.00 व 0.22 है। जिसमें 'एफ' अनुपात मान 37.39 है (पुलिस विभाग के उत्तरदाता)। 'पी' का मान < .00001 है। $p<0.05$ पर परिणाम सार्थक है। अतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मादक पदार्थों का सेवन युवाओं की मनोदशा को प्रभावित करता है।

11. संदर्भ

1. कुमार एम.एस. (2002). भारत में नशीली दवाओं के दुरुपयोग का त्वरित मूल्यांकन सर्वेक्षण। ड्रग्स और अपराध पर संयुक्त राष्ट्र कार्यालय, दक्षिण एशिया के लिए क्षेत्रीय कार्यालय और सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार। नई दिल्ली, भारत।
2. चंडीरामनी के, त्रिपाठी बीएम (1993). शराब और नशीली दवाओं पर निर्भरता से उबरने के लिए मनो–शैक्षिक समूह चिकित्सा। भारतीय जे मनोरोग. 35 :169–72.
3. नायक आरबी, मूर्ति पी. अरूण (2008). अल्कोहल स्पेक्ट्रम विकार। भारतीय बाल रोग विशेषज्ञ. 45 :977–83.
4. बाबू आरएस, सेनगुप्ता एसएन (1997). एक सामान्य अस्पताल में समस्याग्रस्त शराब पीने वालों का एक अध्ययन। भारतीय जे मनोरोग. 39 :13–7.
5. भान, ए. (2009). चिकित्सा पेशेवरों के बीच मादक द्रव्यों का सेवनः नौकरी में असंतोष और प्रतिकूल कार्य वातावरण से निपटने का एक तरीका? इंडियन जे मेड साइंस. 2009; 63:308–9.
6- राना, सुमन एवं जाधव, जगदीश (2018). सकारात्मक युवा विकास और युवाओं में मादक द्रव्यों का सेवन : एक सुनियोजित समीक्षा, International Journal Of Research Culture Society, Special Issue – 14, 40-47.
7. वंदना (2016). युवाओं में मादक व्यसन का कारण एवं निवारण, Anthology : The Research, 1(8): 4-8.